

नौकरी की किताब
सत्र 17: संवाद श्रृंखला का समापन,
विज्डम इंटरल्यूड अध्याय 28
जॉन वाल्टन द्वारा

यह डॉ. जॉन वाल्टन और जॉब की पुस्तक पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 17 है, संवाद श्रृंखला का निष्कर्ष, विज्डम इंटरल्यूड अध्याय 28।

समीक्षा [00:25-1:54]

अब हम इस अंतराल अध्याय, अध्याय 28 में ज्ञान के भजन के बारे में बात करना चाहते हैं, लेकिन आइए थोड़ा समीक्षा करें कि यह हमें यहां कहां लाया है ताकि हम इसमें अपना दृष्टिकोण रख सकें। संवाद अनुभाग पूरा हो गया है। अय्यूब अपने मित्रों के साथ समाप्त हो गया है। वह बातचीत खत्म हो गई है। नौकरी नए सिरे से लाभ की संभावना से आकर्षित नहीं हुई है। भले ही वह दबाव रहा हो, उन्होंने मूल रूप से यह निष्कर्ष निकाला है कि प्रतिशोध सिद्धांत के रूप में जानी जाने वाली प्रणाली टूट गई है। वह संवादों की श्रृंखला दो थी। उन्होंने गलत काम को अपनी विपत्ति का कारण मानने से इनकार कर दिया है। वह संवादों में श्रृंखला तीन, चक्र तीन था।

उन्होंने साबित कर दिया है कि उनकी धार्मिकता इनाम की उम्मीद पर आधारित नहीं है, और ऐसा करने में, उन्होंने भगवान की नीतियों की रक्षा के लिए स्टार गवाह के रूप में अच्छी तरह से काम किया है। उन्होंने प्रदर्शित किया है कि निष्काम धार्मिकता जैसी कोई चीज़ होती है। इसलिए, चुनौती देने वाले का यह दावा कि धर्मी लोगों को पुरस्कृत करने की ईश्वर की नीति प्रतिकूल थी और यहाँ तक कि विध्वंसक भी थी, खारिज कर दिया गया है। चैलेंजर के मामले का प्रतिनिधित्व करने वाले दोस्तों को चुप करा दिया गया था - मामला खारिज कर दिया गया था।

बुद्धि के लिए भजन (अय्यूब 28) - वर्णनकर्ता का मध्यांतर [1:54-2:47]

लेकिन अब हम ज्ञान अंतराल के माध्यम से प्रवचन अनुभाग में अपना परिवर्तन कर रहे हैं। अध्याय 28, फिर से, जैसा कि हमने बात की, जब हमने पुस्तक की संरचना पर चर्चा की, अध्याय 28 वास्तव में एक अलग वक्ता का परिचय नहीं देता है। इसलिए, यह निष्कर्ष निकालना आसान है कि अय्यूब

किसी तरह बोलना जारी रखता है। जैसा कि मैंने उस खंड में उल्लेख किया था, समस्या यह है कि अध्याय 28 में कही गई बातें अय्यूब के पहले या बाद में व्यक्त किए गए वास्तविक दृष्टिकोण पर बिल्कुल भी अच्छी तरह से प्रतिबिंबित नहीं करती हैं। इसलिए, मैं इसे कथावाचक के काम के रूप में देखता हूं जो हमें एक प्रकार का मध्यांतर दे रहा है, ऐसा कह सकता है, और हमें सोचने के एक अलग तरीके में परिवर्तित कर रहा है।

अय्यूब की संरचना 28, बुद्धि के लिए भजन [2:47-3:46]

तो, अध्याय 28 छंद 1 से 11 खनन के चित्रण का उपयोग करते हैं। उस चित्रण का मूल जोर यह है कि खनन छिपी हुई चीजों को प्रकाश में लाता है। श्लोक 12 से 19 तक, ज्ञान से संबंधित अनेक अलंकारिक प्रश्न हैं। यह सुझाव दिया गया है कि ज्ञान मनुष्यों के लिए दुर्गम है फिर भी मूल्य से परे और मानवीय प्रयास और सरलता से परे है। यह क्या है इसके कई संकेतक हैं। अब यह एक लौकिक चर्चा है, और इसके कई संकेतक हैं। फिर अध्याय 28 का अंतिम खंड, श्लोक 20 से 28, ईश्वर ज्ञान का मार्ग प्रदान करता है, और ईश्वर का भय ज्ञान की नींव है।

कार्य 28: बुद्धि और व्यवस्था नेक्सस [3:46-5:02]

तो, कुछ बिंदु क्या बताए जा रहे हैं? सबसे पहले, ज्ञान 28:12 में नहीं पाया जा सकता है, लेकिन यह ईश्वर से आता है जो 28:20 में है। इसलिए, यह स्रोत से, इसे खोजने की कोशिश के विपरीत है। ईश्वर ही है जो इसे देता है। बुद्धि ब्रह्मांड के घटकों के क्रम में पाई जाती है। फिर, यहां हमें ज्ञान और व्यवस्था के बीच एक महत्वपूर्ण संबंध मिलता है। यह संपूर्ण बाइबिल में सत्य है। बुद्धि तब मिलती है जब कोई व्यक्ति व्यवस्था का अनुसरण करता है और व्यवस्था को समझता है तथा व्यवस्था का अभ्यास करता है। एक व्यवस्थित विश्व, व्यवस्थित जीवन और व्यवस्थित समाज ये सभी ज्ञान के लक्ष्य हैं। तो, ज्ञान ब्रह्मांड के घटकों के क्रम में पाया जाता है। आदेश, यह कहा जाता है, दैनिक कार्यों में आसानी से देखने योग्य नहीं है, लेकिन यह सृजन की नींव में सहायक था, और यह चल रहे कार्यों में अंतर्निहित है।

मित्रों न्याय फोकस, ईश्वर बुद्धि फोकस [5:02-7:01]

अय्यूब और उसके दोस्त सोचते हैं कि वे जानते हैं कि ब्रह्मांड की रचना कैसे हुई। प्रतिकार सिद्धांत उनका संचालन सिद्धांत है। उस समीकरण में, धर्मी लोग समृद्ध होंगे; दुष्टों को कष्ट होगा; उनके लिए संसार इसी प्रकार व्यवस्थित है। लेकिन निःसंदेह, ऐसा नहीं है। अय्यूब और उसके दोस्तों को सच्चा ज्ञान नहीं मिला है। जब हम श्लोक 27 को देखते हैं, "तब उसने [भगवान] ने बुद्धि को देखा और उसका मूल्यांकन किया। उसने इसकी पुष्टि की और इसका परीक्षण किया।" यहां ईश्वर सृजन को ज्ञान की कसौटी पर स्वीकार करता है, न्याय की कसौटी पर नहीं। जब अय्यूब और उसके दोस्तों ने प्रतिशोध सिद्धांत को व्यवस्था की नींव बनाने की कोशिश की, तो वे न्याय को ब्रह्मांड में व्यवस्था की नींव बना रहे थे। ईश्वर का यह वाक्यांश उसे पलट देता है और कहता है, "नहीं, आधार न्याय नहीं है।" उन्होंने ज्ञान को देखा और इसका मूल्यांकन किया, इसकी पुष्टि की, इसका परीक्षण किया और ज्ञान की कसौटी पर सृजन को मंजूरी दी। तो, यह थोड़ा अलग दृष्टिकोण है। अय्यूब और उसके दोस्तों ने जिस समीकरण का उपयोग किया है वह अपर्याप्त दिखाया गया है।

अब तक हम जिन नायकों से मिले हैं, अय्यूब के दोस्त, उन सभी की प्रतिष्ठा दुनिया के सबसे बुद्धिमान लोगों में से एक के रूप में है। लेकिन जब हम उनके भाषणों के माध्यम से संवादों के बारे में सोचते हैं, तो उनकी टिप्पणियों में प्रभु का भय प्रमुखता से सामने नहीं आया है। और यहीं, पुस्तक इसी पर केंद्रित है।

अय्यूब 28:18 प्रभु का भय मानना बुद्धि है [7:01-7:26]

श्लोक 28 अपनी स्थापना के तरीके में दिलचस्प है। यह मानव जाति के लिए एक निर्देश है, *एडम*। जब हम इसे पढ़ते हैं: "और उसने मानव जाति से कहा," यह एनआईवी है। "उसने मानव जाति से कहा, [वह *आदम* है] प्रभु का भय मानना - यही ज्ञान है, और बुराई से दूर रहना ही समझ है।"

प्रभु का भय विरोधाभासी है [7:26-8:49]

अब ईश्वर से डरने के इस विचार को हम यह सोचकर अच्छी तरह से समझ सकते हैं कि यह किससे भिन्न है। ईश्वर से डरना उसे अलग मानने और इसलिए उसकी उपेक्षा करने के विपरीत होगा। ईश्वर का भय मानना उसे अक्षम समझने और इसलिए उसके साथ तिरस्कारपूर्ण व्यवहार करने के विपरीत होगा। ईश्वर का भय उसे सीमित या नपुंसक मानने और इसलिए तिरस्कृत होने के

विपरीत होगा। ईश्वर का भय उसे भ्रष्ट मानने और इसलिए उसे डांटे जाने योग्य मानने के विपरीत है। ईश्वर से डरना उसे अदूरदर्शी समझने और इसलिए सलाह दिए जाने के विपरीत होगा। ईश्वर से डरना उसे तुच्छ समझने और इसलिए नाराज होने के विपरीत होगा। ईश्वर से डरने का अर्थ ईश्वर को गंभीरता से लेने का विचार है; हमें ऐसा करने की ज़रूरत है ताकि हम उसे भगवान से कमतर समझने के किसी अन्य जाल में न फंसें।

अडोनाई का डर [भगवान, स्वामी] [8:49-11:28]

अब यह दिलचस्प है कि जब यह पद ईश्वर के भय के बारे में बात करता है, तो यह यहोवा के भय के बारे में नहीं, बल्कि अडोनाई के भय के बारे में बात करता है। यह सचमुच एक दिलचस्प विकल्प है। यह एलोहीम का डर नहीं है; यह यहोवा का भय है। यह पुस्तक में अडोनाई की एकमात्र घटना है। हिब्रू में अडोनाई का उपयोग केवल किसी प्राधिकारी व्यक्ति को संदर्भित करने के लिए किया जा सकता है, चाहे वह इंसान हो या भगवान। इसे अक्सर याहवे के लिए एक शीर्षक के रूप में उपयोग किया जाता है, लेकिन इसका उपयोग अक्सर स्वयं याहवे के संबंध में किया जाता है। तो, यहाँ यह बहुत दिलचस्प है। हम न शदै से डरते हैं, न परमेश्वर से डरते हैं, न यहोवा से डरते हैं, परन्तु यहोवा से डरते हैं।

इसे भगवान के मुख में भी डाला जाता है। यह भगवान बोल रहा है। "उसने मानवजाति से कहा, यहोवा का भय मानना ही बुद्धि है।" तो, यह स्वयं भगवान ही इस तरह से बोल रहे हैं। पुराने नियम में कहीं भी ईश्वर ने स्वयं को केवल अडोनाई शीर्षक से संदर्भित नहीं किया है, इससे जुड़े किसी अन्य लेबल के बिना। तो, यहाँ शब्दों का यह वास्तव में दिलचस्प चयन है। जब हम पाठों का विश्लेषण करते हैं तो यह उसका हिस्सा होता है। हम मानते हैं कि शब्दों का चयन सार्थक, जानबूझकर और उद्देश्यपूर्ण है, और इसलिए, हम उन पर सावधानीपूर्वक विचार करते हैं। अब, फिर से, अडोनाई अधिकार के मुद्दे को सामने लाता है। इसमें प्रभु या स्वामी का भाव है। और यह प्राधिकार के प्रति समर्पण के तत्व को सामने लाता है। यह ऐसी चीज़ है जिसकी इस संदर्भ में बहुत आवश्यकता है, इस ईश्वर से डरकर, उसके प्रति समर्पित होना। तो, नीतिवचन में समान कहावत के विपरीत जहाँ "प्रभु का भय बुद्धि की शुरुआत है।" यहाँ, "अडोनाई का भय ही बुद्धि है।"

ज्ञान के मार्ग के रूप में ईश्वर पर भरोसा करना बुद्धिमानी है। एक निश्चित लेख के साथ निश्चित रूप का प्रयोग श्लोक 12 और 20 दोनों में किया गया है - "ज्ञान।"

अंततः प्रभु का भय "बुराई से दूर रहने" के नैतिक उपदेश के समानान्तर हो जाता है। यह अनुष्ठान पालन के समानांतर नहीं है। तो फिर, यह कुछ ऐसा है जिसके बारे में हमें जागरूक होने की आवश्यकता है।

अय्यूब की आलंकारिक भूमिका 28 बुद्धि के लिए भजन [11:28-13:08]

तो, अध्याय 28 की अलंकारिक भूमिका क्या है? सबसे पहले, यह हमें संवाद से प्रवचन की ओर ले जाता है। तो, इसकी वह यांत्रिक भूमिका है। दूसरा, यह चुनौती देने वाले के तर्क से धर्मी लोगों के लिए समृद्धि लाने के लिए एक अच्छा विचार नहीं है, अय्यूब के तर्क में परिवर्तित होता है, धर्मी लोगों को कष्ट सहने के लिए एक अच्छी नीति नहीं है, और पुस्तक का दूसरा भाग अय्यूब के विवाद से निपटने जा रहा है।

तीसरा, यह पुस्तक को न्याय की खोज से ज्ञान के स्रोत और समीकरण में ज्ञान के महत्व की समझ की ओर स्थानांतरित करता है। अय्यूब और उसके दोस्तों ने बुद्धि को समीकरण से बाहर कर दिया है। जैसा कि वे व्यवस्था को समझते हैं, यह सब न्याय के बारे में रहा है, लेकिन अब यह पूरी तरह से ज्ञान के बारे में हो गया है।

चौथा, अय्यूब ने प्रदर्शित किया है कि उसके पास चैलेंजर के संदेह के विपरीत एक निःस्वार्थ धार्मिकता है। और इसलिए, अब हम आगे बढ़ने के लिए तैयार हैं। पुस्तक को अभी तक अय्यूब की चुनौती से निपटना बाकी है। तो, अब सवाल यह है कि, जैसे ही हम अय्यूब की चुनौती से जुड़े अगले भाग में आगे बढ़ते हैं, वह यह है: क्या जब धर्मी लोग पीड़ित होते हैं तो क्या कोई सामंजस्य हो सकता है? यह, फिर से, चुनौती देने वाले के उस तर्क के विपरीत है जहां प्रश्न निःस्वार्थ धार्मिकता के बारे में था।

धर्मी पीड़ा के साथ सामंजस्य? [13:08-13:50]

यहाँ, जब धर्मी लोगों को कष्ट होता है तो क्या सुसंगति हो सकती है? यह नोटिस देता है कि अय्यूब नियंत्रण की स्थिति में नहीं है और उसकी अपेक्षा उस दिशा को निर्धारित नहीं करनी चाहिए जिसमें स्थिति आगे बढ़ती है। परमेश्वर की बुद्धि नियम बनाती है। इससे पता चलता है कि सुसंगति के बारे में मित्रों की धारणा त्रुटिपूर्ण और सरल है। मित्र की सलाह मानने से अय्यूब की दुनिया में सामंजस्य नहीं आ पाता। इसलिए, बुद्धि को वह समझा जाना चाहिए जो व्यवस्था और सुसंगति लाती है।

ईश्वर बुद्धि/व्यवस्था के स्रोत/लेखक के रूप में [13:50-15:06]

ईश्वर व्यवस्था का रचयिता और सुसंगति की नींव है, लेकिन कोई भी अकेले ईश्वर को ही सुसंगत या व्यवस्थित नहीं कह सकता। सृष्टि करते समय ईश्वर बुद्धि का प्रयोग कर रहा था, लेकिन यह कहना कि ईश्वर बुद्धिमान है, ईश्वर के स्वभाव को कमतर आंकता है। जैसा कि हमने इस पूरे पाठ्यक्रम की शुरुआत में उल्लेख किया था, यह विचार कि ईश्वर किसी तरह उसे कुछ बाहरी मानदंडों पर निर्भर बना रहा है। यहाँ भी वही बात है। निःसंदेह, परमेश्वर बुद्धिमान से कार्य करता है। ईश्वर बुद्धि का स्रोत है। यह सबसे महत्वपूर्ण संबंध है। ईश्वर न्याय का स्रोत है, और ईश्वर बुद्धि का स्रोत है। इसलिए, ईश्वर बुद्धिमान है, या ईश्वर अच्छा है, या ईश्वर पवित्र है जैसी पुष्टिएं भ्रामक हैं क्योंकि विशेषण स्वयं वास्तव में ईश्वर में अपनी परिभाषा पाते हैं। कोई यह भी कह सकता है कि ईश्वर, ईश्वर है। हम जो भी ज्ञान पा सकते हैं उसकी नींव उन्हीं में है। कविता यह नहीं बताती कि ईश्वर बुद्धि है या उसके पास बुद्धि है।

विश्वास में व्यक्त भय [15:06-16:05]

जब हम प्रभु पर भरोसा करते हैं तो हम उनके प्रति अपना भय व्यक्त करते हैं, भले ही हमारी परिस्थितियाँ कितनी भी असुविधाजनक या भ्रमित करने वाली क्यों न हों। हमें उस पर इतना भरोसा है कि हम यह स्वीकार कर सकते हैं कि स्पष्टीकरण की जरूरत नहीं है। हमें विश्वास है कि उसका न्यायपूर्ण स्वभाव अजेय है। हालाँकि जिन परिस्थितियों में हम खुद को पाते हैं उनमें कोई पहचानने योग्य न्याय नहीं है। हमें विश्वास है कि उन्होंने सिस्टम को सबसे अच्छे तरीके से स्थापित किया है, जिसका अर्थ है सबसे बुद्धिमान तरीके से। यहां तक कि जब हम पतन से टूटी हुई व्यवस्था के परिणाम भुगत रहे होते हैं, तब भी हम हमारे प्रति उसके प्रेम पर भरोसा करते हैं। हमें भरोसा है कि

हमारी कठिनाइयों में भी, वह अपना प्यार दिखा सकता है और परीक्षणों के माध्यम से हमें मजबूत कर सकता है।

अय्यूब के महत्व पर निष्कर्ष 28 बुद्धि का भजन [16:05-16:44]

अध्याय 28 पुस्तक के प्रमुख अध्यायों में से एक है। हमें इस पर सावधानीपूर्वक ध्यान देने की आवश्यकता है ताकि हम इसके संदेश को समझ सकें। तो, इसकी एक संरचनात्मक भूमिका है और इसलिए, एक अलंकारिक भूमिका है, लेकिन पुस्तक द्वारा प्रस्तुत किए जाने वाले धार्मिक संदेश में भी इसकी महत्वपूर्ण भूमिका है, क्योंकि यह हमें दुनिया के संबंध में भगवान के बारे में सही तरीके से सोचने में मदद करती है। .

यह डॉ. जॉन वाल्टन और जॉब की पुस्तक पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 17 है, संवाद श्रृंखला का निष्कर्ष, विज्डम इंटरल्यूड अध्याय 28। [16:44]